समकालीन हिन्दी नाटक

डॉ. वसंत माळी
डॉ. प्रमोद पाटील

Scanned with OKEN Scanner

समकालीन हिन्दी नाटक

सम्पादक

डॉ. वसंत माळी

आसारामजी भांडवलदार महाविद्यालय,
देवगांव रंगारी, ता. कन्नड, जि. औरंगाबाद

●

डॉ. प्रमोद पाटील

इन्द्रराज महाविद्यालय, सिल्लोड,
ता. सिल्लोड, जि. औरंगाबाद

पूजा पब्लिकेशन

कानपुर-208 021

Scanned with OKEN Scanner

18. नाटककार डॉ नरेंद्र कोहली
● डॉ. दत्ता कोल्हारे 102–107
19. अक्षयवट में चाणक्य : एक दृष्टिक्षेप
● प्रा. गिरिश कोळी 108–112
20. इक्कीसवीं सदी का नाटक : नेपथ्यराग
● प्रणिता पळसकर 113–116
21. आओ ! तनिक प्रेम करें नाटक की संवेदना
● प्रा. डॉ. वसंत माळी 117–120
22. आधे–अधूरे ● प्रा. जितेन्द्र पवार 121–123
23. समकालीन नाटकों में व्यक्त आर्थिक चेतना
● प्रा. युवराज राजाराम मुळये 124–129
24. स्त्री पुरुषों के नैतिकता का आडंबर– 'कर्फ्यू' !
● प्रा. राउत गजानन निवृत्ती 130–133
25. सैनिक जीवन का कडवा सच कोर्ट मार्शल
● डॉ. अशोक मर्डे 134–140
26. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल का बाल नाट्य साहित्य
(बच्चों के हास्य नाटक के विशेष संदर्भ में)
● प्रा. भागिनाथ यादवराव वाकळे 141–144
27. दो चेहरे : राजनेता की असलियत
● डॉ. दिलीप जाधव सर्जेराव 145–150
28. नाटक परंपरा और नाटक नागमंडल
● डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद 151–160
29. राष्ट्रीयता की जडों तक पहुँचने वाला नाटक : वतन के तीन सिपाही
● शैलेश प्रल्हाद मोरे, डॉ. प्रमोद पाटील 161–167
30. नारी मनोविज्ञान की सशक्त अभिव्यक्ति : डॉक्टर
● सचिन कदम 168–171
31. पं. प्रतापनारायण मिश्र के नाटकों में सामाजिक प्रतिबद्धता
● डॉ. शेख मुख्त्यार शेख वहाब 172–176
32. मिश्र जी के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना का स्वर
● शेख सैबाशिरिन हारुणरशिद 177–180
33. घासीराम कोतवाल : नाटक का मूल्यांकन
● नितिन रंगनाथ गायकवाड 181–184

(इस पुस्तक में छपे विचार आलेख कर्ताओं के अपने विचार है । उन विचारों के साथ संपादक का सहमत होना आवश्यक नही है)

33.

घासीराम कोतवाल : नाटक एक मूल्यांकन

हिन्दी नाट्य रचना का आरंभ भारतेन्दु युग से माना जाता है। हिन्दी नाटक साहित्य रचना के माध्यम से कई नाटककारों ने रंगमंच के सहारे लोकप्रियता हासिल की है। जयशंकर प्रसाद ने आधुनिक हिन्दी नाट्य साहित्य से लोगों को प्रभावित किया । अनुवाद के माध्यम से रवींद्रनाथ ठाकुर ने नाटककारों को प्रभावित किया है।

हिन्दी नाटक साहित्य के साथ – साथ मराठी नाटकीयता एवं रंगमंच को भी भूला नहीं जा सकता । मराठी नाटकों के माध्यम से उस तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण किया गया। मराठी नाटक साहित्य जगत के प्रसिद्ध नाटककार ' विजय तेंडुलकर ' के नाटकों के बारे में कहा जाए तो इनके सभी नाटक रंगमंच पर सफल साबित हुए हैं, 'श्रीमंत', 'कावळयाची शाळा', 'शांतता कोर्ट चालू आहे', 'गिधाडे', 'सखाराम वाइंडर', 'घाशीराम कोतवाल', 'वेबी', 'कमला', 'कन्यादान' आदि उनके प्रसिद्ध नाटक माने जाते हैं। इनमें से सबसे लोकप्रिय एवं चर्चित नाटक कहा जाए तो 'घासीराम कोतवाल ' यह नाटक है। वैसे देखा जाए तो इनके सभी नाटक रंगमंच की दृष्टि से अत्यधिक महत्व रखते हैं। उनके लिखे कई नाटकों का अन्य भाषाओं में अनुवाद और मंचन हुआ है।

मराठी नाटककार विजय तेंडुलकर का जन्म 6 जनवरी 1928 में महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले में ब्राम्हण परिवार में हुआ। उन्होंने केवल छह साल की उम्र में अपनी पहली कहानी लिखी थी। उनके पिता नौकरी के साथ ही प्रकाशन का भी व्यवसाय करते थे। इसलिए पढ़ने लिखने का माहौल उन्हें अपने घर में ही मिल गया। नाटकों को देखते हुए बड़े हुए विजय तेंडुलकर ने ग्यारह साल की उम्र में पहला नाटक लिखा और उसमें काम भी किया था।''[1] प्रसिद्ध नाटककार विजय तेंडुलकरजी की मृत्यु 19 मई 2008 में हुई । उन्हें 1971 में संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार मिला इसीके साथ–साथ उन्हें भारत सरकार व्दारा 'पदमभूषण ' से गौरव किया गया, कालिदास पुरस्कार ऐसे कई पुरस्कार उन्हें मिले हैं।

Scanned with OKEN Scanner

' घासीराम कोतवाल ' यह नाटक 1973 में प्रकाशित हुआ। इस " नाटक में कथावस्तु प्रमुख नहीं लेखक का जो भी लक्ष्य है उसे उसने नृत्य, संगीत तथा गीतों द्वारा शुरु किया है। कथावस्तु है परंतु नाममात्र "[2] घासीराम एक कनौजी ब्राम्हण है। कामकाज की तलाश में वह पुणे जाता है। लेकिन वहाँ के ब्राम्हणों द्वारा उसें अपमानित किया जाता है और वहाँ के एक वैश्या द्वारा भी उसका खिलवाड़ होता है। अपमानित हो जाने के कारण अपनी 14 साल की लड़की ललिता गौरी के शरीर को माध्यम बनाकर वह वासना में लिप्त नानासाहब तक पहुँच जाता है। अपनी लड़की उन्हें समर्पित करता है, बदले में पुणे की कोतवाली माँगता है। धूर्त नानासाहब उसे तुरंत कोतवाली बहाल कर देते हैं।

नानासाहब भोग विलास में लिप्त होने के कारण वह अपने खुशी के लिए उसे नयी–नयी जवान लड़कियाँ चाहिए और उन्हीं के चक्कर में वह फँस जाता है। इसका फायदा उठाकर घासीराम कोतवाल स्वयं पर हुए अपमान का बदला उन ब्राम्हणों से लेता है। अब यह पुणे के इन तथाकथित भ्रष्ट ब्राम्हणों के खिलाफ खुलकर अत्याचार शुरु कर देता है। यह अत्याचार सामान्य नागरिकों पर भी शुरु करता है। घासीराम की लड़की को गर्भ रह जाता है। इसकी चर्चा न हो, बदनामी न हो इसलिए नानासाहब उसे और के द्वारा खत्म कर देते हैं। घासीराम बैंचेन है पर वह कुछ भी नहीं कर सकता । प्रजा पर उसके अत्याचार और भी बढ़ने लगते हैं। पुणे के ब्राम्हण नानासाहब के पास घासीराम के उठते है। नानासाहब फिर सोचता है की अब घासीराम अपने कुछ काम का नहीं रहा है। " नानासाहब पेशवा आदेश निकालता है कि घासीराम को अनेक यातनाएँ देकर उसकी बेईज्जती करके खत्म कर दिया जाए।"

अंत में नानासाहब घासीराम को अपने आदमियों द्वारा खत्म कर देते हैं। इस प्रकार नाटक की कथावास्तु का अंत घासीराम की मृत्यु के बाद हो जाता है।

इस नाटक में दो प्रमुख पात्र उभरकर आते हैं एक तो भोग–विलास में लुप्त नानासाहब और दूसरा ब्राम्हणों पर अत्याचार करने वाला घासीराम जो अपने बदले की भावना से उसे पता ही नहीं चल पाता की वह किस रास्ते पर जा रहा है और उसके परिणाम क्या होंगे। घासीराम और नानासाहब दोनों भी चरित्र प्रासंगिक लगते हैं। इस नाटक के पात्र नानासाहब के बारे में मराठी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक का कहना है कि "असामान्य व्यक्तित्व की तलाश करना आसान कार्य नहीं होता, कारण असामान्य व्यक्तित्व से सामाजिक मन प्रभावित होता है। उस आदर को धक्का देना कठिन होता है। उसके लिए निर्भयता आवश्यक होती है। ऐतिहासिक व्यक्तित्व पर व्यंग्य करना उसका द्वेश करने जैसा होता है। कइयों को इस प्रकार का कार्य असाहित्यिक भी लगता है।"[3] नाटककार विजय तेंडुलकर

ने इस नाटक में केवल एक सत्य प्रसंग को उजागर करने का प्रयास किया है जिसमें नाना फडनवीस और तत्कालीन पतनोन्मुख समाज के चित्रण द्वारा कुछ राजनीति एवं सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में यथार्थ चित्रण किया गया है।

नाटककार ने एक किवदंती के आधारपर नाटक की कच्ची सामग्री यी है तथा दंतकथा अध्ययन कर के अपने नाटक का विषय बनाया है, इस नाटक का कथानक तत्कालीन सामाजिक स्थिति का चित्रण करता है। इस नाटकं में इतिहास कल्पना और रोमांस आदि बातों का मिश्रण कर नाटककार ने यह नाटक रंगमंच की दृष्टि से अत्याधिक सफलतापूर्वक तैयार किया है। इस नाटक की कथावस्तु इतनी प्रभावी नहीं है फिर भी रंगमंच पर वह प्रभावी सिद्ध हुआ है क्यों कि कला में संवाद संगीत आदि बातों का अलग महत्व होता है और उन्हीं के प्रभावित के कारण उसमें जान आती है। नाटककार विजय तेंडुलकर स्थापित किए हैं। नाटक में "परंपरागत लोकनाट्य और परंपरा पाश्चात्य नाटक की उपलब्धियों और विज्ञान द्वारा उपलब्ध कराए गये उपकरणों और नवीन तकनीक का प्रयोग हुआ है। यह लोकानाट्य के लचीले शिल्पतंत्र का प्रयोग इसमें खुलकर हुआ है। यह नाटक मराठी और हिन्दी दोनों भाषाओं में रंगमंच पर प्रस्तुत हुआ है।"

अंतः कहा जा सकता है कि मराठी नाटक साहित्य में घासीराम कोतवाल ' यह नाटक अपना अलग महत्व रखता है, क्योंकि यह नाटक रंगमंच पर अपना असली रूप दिखाता है। घासीराम कोतवाल इस नाटक का प्रथम मंचन 16 दिसंबर 1972 में हुआ था। पहले–पहले तो निदेशक नट, संगीत, नृत्य आदि बातों के लेकर परीक्षकों में विवाद निर्माण हुआ। लेकिन आगे चल कर लोग इसे देख प्रभावित होते थे, कलाकारों ने 'थिएटर अकादमी की स्थापना कर के लगभग चौदह सालों तक इस नाटक का सफलतापूर्वक मंचन किया गया । इस नाटक के माध्यम सें नाटककार ने प्रायोगिक रंगभूमि को एक नया रूप दिया है। इसमें घासीराम एक प्रवृत्ति है, वह विशिष्ट सामाजिक अवस्था की निर्मिति है, संगीत, नृत्य,भजन , लावणी, कीर्तन ओळगीत आदि लोककलाओं का प्रयोग भी इस नाटक में हुआ है। यदि आज के समय विभिन्न भाषा साहित्य के नाटकसाहित्य की ओर देखा जाए तो इस प्रकार का नाटक शायद ही इतना प्रभावित ढंग से लिखा गया हो. आज के तत्कालीन समाज की वास्तविक का चित्रण होना आवश्यक है, वैसे देखा जाए तो आज के इस आधुनिक युग में नाटकों के रंगमंच का महत्व कम होते दिखाई देने लगा है। लेकिन नाटक साहित्य में और भी नयापन आना आवश्यक है।

Scanned with OKEN Scanner

संदर्भ–

1. डॉ. भुक्तरे बळीराम संभाजी–आधे–अधुरे एवं घासीराम कोतवाल का तुलनात्मक अध्ययन. पृ. स. 58–60
2. वही.पृ. स. 66
3. नरहर करुंपकर, आ. मराठी नाटक, आशय आणि आकृति बंध, पृ. स. 112
4. डॉ. भुक्तरे बी.एस., आधे अधुरे एवं घासीराम कोतवाल का तुलनात्मक अध्ययन. पृ. स. 86

– शोध–छात्र
नितीन रंगनाथ गायकवाड
इ.मेल. nitingaikwad73@gmail.com

●●

Scanned with OKEN Scanner